



Amire Ahle Sunnat Ke 150 Irshadat (Hindi)

पृष्ठसंख्या : 304

Weekly Booklet : 304

अमीरे अहले सुन्नत इकबले अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अकबर  
क़ादिरि रज़वी رحمۃ اللہ علیہ के मुख्तारिक क़रामात का मन्सूअ

# अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

संस्करण 20

(किस्त : 3)



पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया

(दरभे इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط  
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा  
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी رَضْوِيَّ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़  
 लीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاذْخُرْ  
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर  
 अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ! (सुत्तरफ ज 1, 10, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना  
 व बकीअ  
 व मगिफरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

सिने त्बाअत : ज़िल का'दह 1444 हि., जून 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

## ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुक्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

### राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,  
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

### क़ियामत के रोज़ हसरत

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

### किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط  
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

**दुआए खलीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत :** या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात” पढ़ या सुन ले उसे अमीरे अहले सुन्नत के सदक़े नेकी की राह पर चला और दीनो दुन्या की ख़ूब बरकतें अता फ़रमा ।  
 أمين بجاه خاتم النبیین صلی الله علیه و آله وسلم

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा कमाल है : “ إِذَا نَسِيتُمْ شَيْئًا فَصَلُّوا عَلَيَّ تَذَكُّرًا ۚ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ ” या'नी जब तुम कोई चीज़ भूल जाओ तो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ लिया करो إِنْ شَاءَ اللَّهُ वोह चीज़ तुम्हें याद आ जाएगी ।”  
 (القول البدیع، ص 427)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

### बुज़ुर्गों के इर्शादात की अहम्मिय्यत

हज़रते लुक्मान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया : उलमा के साथ लाज़िमी तौर पर बैठो और हिक़मत वालों का कलाम सुना करो क्यूं कि अल्लाह पाक हिक़मत के नूर से मुर्दा दिल को उसी तरह जिन्दा करता है जिस तरह मुर्दा ज़मीन को बारिश के क़तरों से ।  
 (مجم کبیر، 8/199، حدیث: 7810)

याद रहे ! इल्मो हिक़मत भरी बातों से जहां फ़िक़्रो नज़र के दरीचे रोशन होते हैं वहीं इल्मे दीन सीखने का सवाब भी हाथ आता है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी जि'याई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ भी अस्लाफ़ (गुज़श्ता बुजुर्गों) के तरीके पर अमल करते हुए अम फ़हम अन्दाज़ में कुरआनो हदीस की रोशनी में न सिर्फ़ शर्इ सुवालात के जवाबात इर्शाद फ़रमाते हैं, बल्कि बा'ज़ अवकात कीमती तिब्बी मा'लूमात से भी रू शनास फ़रमाते, मुतअद्दद गुथियों को सुलझाते (या'नी मुश्किलात को हल फ़रमाते), मुख़्तलिफ़ इल्मी मदनी फूलों के ज़रीए उसे और मुन्फ़रिद बनाते और देखने सुनने वालों के दिलों में ख़ौफ़े खुदा व इश्के मुस्तफ़ा की शम्अ भी फ़रोज़ां (रोशन) फ़रमाते हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की मजलिस वा'जो नसीहत का ख़ज़ीना और गुमराहों के लिये हिदायत का ज़ीना है। आइये ! मुख़्तलिफ़ मौजूआत पर आप के इर्शादाते अलिया मुलाहज़ा कीजिये :

## अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

﴿1﴾ इस्लाम अमन और राहत का पैग़ाम देता है।

(17 शब्वाल 1435 ब मुताबिक़ 14 अगस्त 2014)

﴿2﴾ कोई काम करना हो तो (उसे) सन्जीदा (Serious) लेना होगा, इन्सान सन्जीदगी से कोई काम करे तो मन्ज़िल पा लेता है।

(20 शब्वाल 1435 ब मुताबिक़ 16 अगस्त 2014)

﴿3﴾ हस्बे ज़रूरत रोज़ी पर क़नाअत करना सीखें।

(4 जुल का'दतिल ह़राम 1435 हि., 30 अगस्त 2014)

﴿4﴾ फुज़ूल बातों से इस लिये भी बचें कि फुज़ूल बात करते करते कहीं गुनाहों भरी गुफ़्तगू में न पड़ जाएं। (4 जुल का'दतिल ह़राम 1435 हि., 30 अगस्त 2014)

﴿5﴾ जिस मुरीद में दीनी खूबियां जितनी ज़ियादा होंगी, पीर अपने उस मुरीद से ज़ियादा महबूबत करेगा। (18 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴿6﴾ वालिदैन अपनी औलाद पर येह ज़ाहिर न करें कि हम अपने फुलां बेटे या बेटी से ज़ियादा महबूबत करते हैं वरना दीगर एहसासे कमतरी का शिकार होंगे और येह उन के लिये बाइसे हलाकत (बाइसे नुक़सान) होगा।

(18 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴿7﴾ सोशल मीडिया पर अपने बने हुए एकाउन्ट्स पर अपनी फ़ोटो लगाना मुझे अच्छा नहीं लगता, अपनी तसावीर ख़त्म कर के हुब्बे जाह का ख़ातिमा करने की कोशिश करें। (18 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴿8﴾ जितना ज़ियादा नेकी करने में शैतान वस्वसे डाले, उतनी ही ज़ियादा हिम्मत से नेकी करनी चाहिये। (18 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴿9﴾ बच्चों को जानवरों के साथ हुस्ने सुलूक का ज़ेहन देना चाहिये।

(30 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴿10﴾ अपने नेक आ'माल पर मुत्मइन नहीं होना चाहिये बल्कि अल्लाह पाक की खुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये।

(30 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴿11﴾ पीर की तवज्जोह हासिल करने के लिये पीर की इताअत की जाए।

(30 जुल का'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴿12﴾ कुतुब तस्नीफ़ करना आसान काम नहीं, जो इस का अहल हो उसी को येह काम करना चाहिये। (फ़र्स्ट जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 26 सितम्बर 2014)

﴿13﴾ अच्छे दोस्त को पहचानने के लिये उस के साथ सफ़र करें या कोई मुआमला मसलन ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा करें।

(फ़र्स्ट जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 26 सितम्बर 2014)

﴿14﴾ जब तक हम ने “अल्फ़ज़” न बोले, हमारे हैं, जब निकल गए तो दूसरों के हो गए, वोह जो चाहें करें। (3 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 28 सितम्बर 2014)

﴿15﴾ सहाबए किराम अपने बच्चों को बहादुरी की तरबियत दिया करते थे। हमारे बच्चे शेर की तरह बहादुर होने चाहिए।

(4 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 29 सितम्बर 2014)

﴿16﴾ सब मिल कर मुल्क की ता'मीर और मस्जिद भरो तहरीक में हमारा साथ दें, हमारा बच्चा बच्चा नमाज़ी बन गया तो मुल्क भी खुशहाल हो जाएगा।

(5 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 30 सितम्बर 2014)

﴿17﴾ सुन्नत में अज़मत है।

(10 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 5 अक्टूबर 2014)

﴿18﴾ मुआशरे की ग़लत़ रुसूमात में शामिल हो जाना मर्दानगी नहीं बल्कि मर्द वोह है जो मुआशरे को अपने पीछे चलाए।

(11 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 6 अक्टूबर 2014)

﴿19﴾ किफ़ायत शिअरी अपनाना सीख लें और अगर एक दिन का खाना बच जाए तो फेकने की बजाए दूसरे दिन खा लें।

(16 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 11 अक्टूबर 2014)

﴿20﴾ बुजुर्गों से निस्बत रखने वाली हर शै “तबर्क” है।

(16 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 11 अक्टूबर 2014)

﴿21﴾ वालिदैन से ख़िदमत लेने की बजाए इन की ख़िदमत करें।

(16 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 11 अक्टूबर 2014)

﴿22﴾ मुआफ़ी मांगने से वेल्यू (Value) डाउन (Down) नहीं अप (Up) होती है।

(23 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्टूबर 2014)

﴿23﴾ फुजूल से बचो ताकि गुनाह में न पड़ जाओ ।

(23 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्टूबर 2014)

﴿24﴾ किसी को “मनवाना” हमारा काम नहीं “समझाना” काम है ।

(23 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्टूबर 2014)

﴿25﴾ अपनी नेकियों पर ए’तिमाद न करें बल्कि **अल्लाह** की रहमत पर नज़र रखें ।

(23 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्टूबर 2014)

﴿26﴾ मिल कर खाना खाते हुए ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार न करें कि दूसरों को धिन आए, मुहज़्ज़ब से मुहज़्ज़ब तरीन अन्दाज़ होना चाहिये ।

(24 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 19 अक्टूबर 2014)

﴿27﴾ रंग बातों से कम और सोहबत से ज़ियादा चढ़ता है ।

(25 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्टूबर 2014)

﴿28﴾ मुख़्लिस शख़्स हज़ार पर्दों में छुप कर भी नेक काम करे, **अल्लाह** पाक उस को लोगों में मशहूर कर देता है ।

(25 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्टूबर 2014)

﴿29﴾ ख़ौफ़े खुदा की एक अहम अलामत येह है कि बन्दा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों से बचे ।

(25 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्टूबर 2014)

﴿30﴾ मिलन सार शख़्स से लोग महब्बत करते हैं ।

(25 जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्टूबर 2014)

﴿31﴾ बकर ईद हो या मीठी ईद, हमें डर डर कर और कम खाना चाहिये ।

(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्टूबर 2014)

﴿32﴾ मेरा तजरिबा है कि फ़ी ज़माना मुसलमानों की ग़ालिब अक्सरिय्यत को दुरुस्त नमाज़ पढ़ना नहीं आती, न मख़ारिज दुरुस्त हैं और न अरकान दुरुस्त अदा करते हैं ।

(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्टूबर 2014)



- ﴿33﴾ हमारे हर काम का मह्वर (मक्सद) रिजाए इलाही होना चाहिये ।  
(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्टूबर 2014)
- ﴿34﴾ हमारी जिन्दगी का मक्सद **अल्लाह** व रसूल को मनाना है, मगर हम लोगों को मनाने में ख़्वार (ज़लील) हो रहे हैं ।  
(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्टूबर 2014)
- ﴿35﴾ मालिकान अपनी गाड़ियों में लिख कर लगा दें : इस गाड़ी में गाने बाजे और फ़िल्में वगैरा नहीं दिखाई जातीं, मुसाफ़िर (Passengers) इसरार न करें ।  
(3 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 27 अक्टूबर 2014)
- ﴿36﴾ रिज़्के हलाल के हुसूल के लिये वोह कारोबार कीजिये जिस में दीन की ख़िदमत भी कर सकें ।  
(3 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 27 अक्टूबर 2014)
- ﴿37﴾ बुराइयों से बचने का शुऊर बुराई से बचने का ज़रीआ है ।  
(4 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 28 अक्टूबर 2014)
- ﴿38﴾ इमाम मुआशरे के मुअज़्ज़ज़ीन हैं, इन का एहतिराम कीजिये । इन की ख़िदमत करें मगर मुसाफ़हे के दौरान रक़म न दिया करें बल्कि लिफ़ाफ़े में डाल कर तन्हाई में दें ।  
(5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्टूबर 2014)
- ﴿39﴾ ख़ादिमे मस्जिद मुआशरे का मज़्लूम तरीन फ़र्द है, इस के साथ भी माली तआवुन करें ।  
(5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्टूबर 2014)
- ﴿40﴾ दुकानों वगैरा के नाम मुतबरक न रखे जाएं क्यूं कि इन की तौहीन हो सकती है मसलन ग़ौसिया टेलर्ज़ वगैरा बल्कि दुन्यावी नाम रखे जाएं ।  
(5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्टूबर 2014)
- ﴿41﴾ अफ़सोस ! आज कल ग़फ़लत का दौर दौरा है, ख़ौफ़ की चीज़ें मसलन बादल का गरजना और बिजली का कड़कना वगैरा में लोग तौबा इस्तिफ़ार

के बजाए उछल कूद करते और लुत्फ उठाते हैं ।

(5 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 29 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴿42﴾ गुनाह से बचने के लिये गुनाह के अस्बाब को ख़त्म करना होगा ।

(6 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 30 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴿43﴾ अल्लाह पाक की ना फ़रमानी करना मुसल्मान का नहीं, शैतान का काम है ।

(7 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 31 अक्तूबर 2014)

﴿44﴾ मुसल्सल नेकी की दा'वत देते रहें, शर्मो झिजक ख़त्म होती जाएगी ।

(7 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 31 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴿45﴾ जिस बात से गुनाहों का दरवाज़ा खुले उस से इज्तिनाब करें ।

(8 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., फ़र्स्ट नवम्बर 2014)

﴿46﴾ क़ब्रिस्तान जाते रहिये कि इस से इब्रत हासिल होती है ।

(8 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., फ़र्स्ट नवम्बर 2014)

﴿47﴾ जिस (मुअ़ालिज) के इलाज से फ़ाएदा न हो तो उसे बुरा भला न कहें, शिफ़ा देने वाला तो अल्लाह करीम है । (9 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴿48﴾ जिस चीज़ की निस्बत हरमैने त़य्यिबैन (मक्का व मदीना) और बुजुर्गों से हो जाए, शरीअत के दाएरे में रहते हुए उस के लिये बेहतर से बेहतरीन अल्फ़ाज़ इस्ति'माल कीजिये । (9 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴿49﴾ हर उस बात और हरकत से बचिये जिस से किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी हो सकती हो । (10 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴿50﴾ हर फ़र्द को अ़लिम बनने की कोशिश करनी चाहिये, अ़लिम होना बहुत बड़ी सआदत है । (18 रबीउल आख़िर 1436 हि., 7 फ़रवरी 2015)

﴿51﴾ उस्ताज़ और किताबों का ज़ियादा से ज़ियादा एहतिराम किया जाए, اِن شَاءَ اللهُ इल्म की रूह हासिल होगी । (11 मुहर्रमुल ह्राम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014)

﴿52﴾ अगर इमामे मस्जिद मिलन सार व बा अख़्लाक़ हो तो वोह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकता है । ऐसा इमामे मस्जिद महल्ले का बेताज बादशाह होता है । (11 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿53﴾ किसी मुसल्मान को दूसरे मुसल्मान से बदज़न नहीं करना चाहिये । (11 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿54﴾ अगर तलबा के अख़्लाक़ दुरुस्त हो जाएं और उन में सहीह मा'नों में सन्जीदगी आ जाए तो येह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकते हैं ।

(15 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 8 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿55﴾ दीनी किताबें सस्ती बेची जाएं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा लोग इस्तिफ़ादा करें, येह दीनी मुरव्वत (अख़्लाक़) का तकाज़ा है ।

(16 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 9 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿56﴾ दाढ़ी और इमामा ऐसी ने'मते हैं जो इन्सान में मौजूद बुराइयां दूर करती हैं । (21 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿57﴾ मोटर साइकिल पर ट्रिपल सुवारी (तीन का बैठना) क़ानूनी व अख़्लाकी जुर्म और जान के लिये ख़तरा है ।

(21 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿58﴾ मां बाप का इलाज अपना पेट काट कर (या'नी कम खा कर गुज़ार कर के) भी करना चाहिये । (21 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 खुसूसी)

﴿59﴾ जो नेकी करना चाहते हैं उन को सन्जीदा (Serious) होना ज़रूरी है, सिर्फ़ "चाहना" काफ़ी नहीं । (29 मुहर्मुल ह़राम 1436 हि., 22 नवम्बर 2014)

﴿60﴾ जब कोई तबीअत पूछे तो जवाब में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहा जाए, बच्चों को भी सिखाया जाए । (7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)

- ﴿61﴾ मुझे बचपन से नमाज़े बा जमाअत पढ़ने का जज़्बा था ।  
(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)
- ﴿62﴾ ख़ामोश रहने में दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद हैं ।  
(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)
- ﴿63﴾ दा'वते इस्लामी का चैनल अच्छी अच्छी निय्यतों से देखना इबादत है, क्यूं कि येह ख़ालिस दीनी चैनल है ।  
(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)
- ﴿64﴾ हज़रते आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللهُ عَنْهَا** की शान, सितारों और मिट्टी के ज़रों से ज़ियादा है ।  
(16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)
- ﴿65﴾ तंगदस्ती के अस्बाब में से येह भी है कि मां बाप को नाम ले कर पुकारा जाए ।  
(16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)
- ﴿66﴾ मुख़ातब से उस के मक़ामो मर्तबे के मुताबिक़ अच्छे अल्फ़ाज़ से बात कीजिये ।  
(16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)
- ﴿67﴾ अस्ल नेक वोही है जो **अल्लाह** पाक के हां भी नेक हो, महूज़ शोहरत होना काफ़ी नहीं ।  
(21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)
- ﴿68﴾ दा'वते इस्लामी “अमल” की तहरीक है, रस्मी (Formality) नहीं ।  
(21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)
- ﴿69﴾ नाम होने (या'नी शोहरत) में भी इम्तिहान है ।  
(21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)
- ﴿70﴾ हर एक को उस की नफ़िसयात के मुताबिक़ नेकी की दा'वत दी जाए ।  
(28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)
- ﴿71﴾ काश ! ऐसा हो जाए कि जब हम बोलना चाहें तो थोड़ा सा रुक जाएं, सोचें, फिर बोलें ।  
(28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴿72﴾ किसी मुसल्मान पर ज़बाने ता'न न खोली जाए ।

(28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴿73﴾ हाफ़िज़ को सारा साल कुरआने मजीद की तिलावत करते रहना चाहिये ताकि मन्ज़िल पक्की रहे । (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴿74﴾ हत्तल इम्कान ऐसी फ़्लाइट या बस में सफ़र करें जिस में किसी नमाज़ का वक़्त न आए । (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014 खुसूसी)

﴿75﴾ अपने बच्चों को शेर बनाओ, दा'वते इस्लामी के रिसाले पढ़ाओ, भूतों परियों की कहानियों से बचाओ । (2 रबीउल अव्वल 1436 हि., 24 दिसम्बर 2014)

﴿76﴾ लोग उमूमन कह देते हैं कि अल्लाह पाक ने यूं फ़रमाया है, कुरआन में यूं है, जो कि बहुत ग़लत अन्दाज़ है । जब तक सो फ़ीसद यकीन या किसी मुफ़्ती या मुस्तनद आलिम से तस्दीक़ न कर लें तो अपनी तरफ़ से यूं न कहा करें ।

(2 रबीउल अव्वल 1436 हि., 24 दिसम्बर 2014)

﴿77﴾ मोमिन नर्म त़बीअत और नर्म ज़बान वाला होता है ।

(4 रबीउल अव्वल 1436 हि., 26 दिसम्बर 2014)

﴿78﴾ नर्म मिज़ाज शख़्स से लोग महब्बत करते हैं ।

(4 रबीउल अव्वल 1436 हि., 26 दिसम्बर 2014)

﴿79﴾ बातिन को उजला और नया करने के लिये सच्ची तौबा कर लीजिये ।

(5 रबीउल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴿80﴾ जान बूझ कर नमाज़ तर्क करने से दिल मैला होता है ।

(5 रबीउल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴿81﴾ मुसल्मान जहां भी हों, इस्लाम के उसूलों के पाबन्द हैं ।

(5 रबीउल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴿82﴾ जुलूसे मीलाद में नियाज़ को लोगों की तरफ़ फेंकने के बजाए, हाथों में दिया करें। (5 रबीउल अब्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴿83﴾ जुलूसे मीलाद में इस तरह पुर वकार और मुअदब अन्दाज़ में शिकत करें कि गुमराह भी देखे तो सहीह राह पर आ जाए।

(5 रबीउल अब्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴿84﴾ अस्ल हाफ़िज़े कुरआन वोह है जो कुरआन के अहकाम माने और अमल करे। (6 रबीउल अब्वल 1436 हि., 28 दिसम्बर 2014)

﴿85﴾ मोबाइल फ़ोन के नुक़सानात इस के फ़वाइद से ज़ियादा हैं।

(8 रबीउल अब्वल 1436 हि., 30 दिसम्बर 2014)

﴿86﴾ रोज़ाना एहतिसाब करना चाहिये कि ज़िन्दगी का एक कीमती दिन गुज़र गया। (9 रबीउल अब्वल 1436 हि., 31 दिसम्बर 2014)

﴿87﴾ तारीख़े दुन्या के मुतालए से येह बात मा'लूम होती है: “इन्क़िलाब” हमेशा एक ही लाता है, बक़िय्या लोग उस एक के मुअविन होते हैं।

(10 रबीउल अब्वल 1436 हि., फ़र्स्ट जनवरी 2015)

﴿88﴾ चरागां और बुजुर्गानि दीन की नियाज़, सुन्नियों का शिआर है।

(10 रबीउल अब्वल 1436 हि., फ़र्स्ट जनवरी 2015)

﴿89﴾ जो हमारे हाथ में है उसे तो कोई छीन सकता है मगर जो मुक़द्दर में है वोह कोई नहीं छीन सकता। (11 रबीउल अब्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴿90﴾ मसाजिद को आबाद करने का तरीक़ा येह है कि जब भी नमाज़ पढ़ने जाएं, किसी नए शख़्स पर इन्फ़रादी कोशिश कर के साथ लेते जाएं। मस्जिद में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तरकीब बनाएं, मस्जिद में दिल लगाएं नीज़ वहां बैठ कर ज़िक़्रो अज़कार किया करें। (11 रबीउल अब्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴿91﴾ दिल समुन्दर की तरह वसीअ होना चाहिये, जिस का दिल बार बार दुख जाता हो वोह दीन तो क्या दुन्या का काम भी नहीं कर सकता, उस के दोस्त भी बहुत थोड़े होते हैं। (11 रबीउल अब्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴿92﴾ काम्याब होना चाहते हो तो दिलों में इश्के मुस्तफ़ा की शम्अ फ़रोज़ां कर लो। (11 रबीउल अब्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴿93﴾ उस डॉक्टर से इलाज करवाइये जो अमानत दार और ख़ौफ़े खुदा वाला हो। (11 रबीउल अब्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴿94﴾ नेक आ'माल का हकीकी अमिल, हजारों लाखों में पहचाना जाता है। (12 रबीउल अब्वल 1436 हि., 3 जनवरी 2015)

﴿95﴾ दीन पर अमल करने से वोह इज़्जत मिलती है कि वुज़रा बल्कि सदर भी रश्क करते होंगे। (12 रबीउल अब्वल 1436 हि., 3 जनवरी 2015)

﴿96﴾ बा'ज अवकात किसी नेक शख़्स के पास बैठने से तक्दीर बदल जाती है। (17 रबीउल अब्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴿97﴾ मदनी मुज़ाकरा मा'लूमात का ख़ज़ाना है। (17 रबीउल अब्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴿98﴾ हुसूले इल्मे दीन बहुत अहम इबादत है। (17 रबीउल अब्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴿99﴾ मदनी मुन्नियों को भी कभी कभी मदनी बुरक़अ पहनाना चाहिये ताकि बड़ी होने से पहले ही पर्दे का ज़ेहन बने। (19 रबीउल अब्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴿100﴾ किसी मुसलमान के बारे में न कहा जाए कि “हलाक हो गया” बल्कि “इन्तिकाल कर गया” कहना बेहतर है। (19 रबीउल अब्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴿101﴾ अगर इमाम व मुअज़्ज़िन मिलन सार और मीठे मीठे हों तो लोग इन के इर्द गिर्द होंगे । (19 रबीउल अब्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴿102﴾ इमाम व मुअज़्ज़िन को अपनी गुर्बत पर फ़ाका कर लेना चाहिये, मगर किसी मालदार के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिये ।

(19 रबीउल अब्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴿103﴾ अपने दिल में इश्के रसूल का चराग़ जलाइये, दुन्या व आख़िरत में काम्याबी होगी । (2 रबीउल आख़िर 1436 हि., 22 जनवरी 2015)

﴿104﴾ आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की बात हमारे लिये हर्फ़े आख़िर है । (3 रबीउल आख़िर 1436 हि., 23 जनवरी 2015)

﴿105﴾ गुनाहों के अज़ाबात से वाकिफ़ियत होगी तो उन से बचने का ज़ेहन बनेगा । (4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿106﴾ बन्दा इतने मेहरबान रब की ना फ़रमानी कैसे करे जो ला ता'दाद ने'मतों से नवाज़ता है ? (4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿107﴾ उमूमन झाड़ने वाले सेठ से, नोकर वफ़ा नहीं करता ।

(4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿108﴾ मीठे बोल में ऐसा सेहूर (जादू) है कि सरकश (ना फ़रमान), मुतीअ (फ़रमां बरदार) हो जाए । (4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿109﴾ तीखे बोल में ऐसा ज़हर है कि औलाद ना फ़रमान हो जाए ।

(4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿110﴾ बिला इजाज़ते शर्ई, दिल आज़ार अन्दाज़ से घूर कर देखना भी गुनाह है । (4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴿111﴾ ज़ब्बा सच्चा हो तो काम्याबी क़दम चूम लेती है ।

(4 रबीउल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)



﴿112﴾ जब किसी काम की पूछगछ न हो तो वोह पहले ठन्डा (सुस्त) और फिर ख़त्म हो जाता है । (4 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿113﴾ अगर आप ने किसी की इस्लाह की कोशिश की और वोह सुन्नतों का अमिल बन गया तो गोया आप ने उस की आने वाली नस्लों की इस्लाह कर दी । (4 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿114﴾ दा'वते इस्लामी के चेनल की ने'मत से भरपूर फ़ाएदा उठाएं और इस को देखने की दा'वत देते रहें । (4 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿115﴾ उर्स मनाने की रूह येह है कि जिन का उर्स मना रहे हैं उन की सीरत पर भी अमल करें । (5 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴿116﴾ जिस तरह खाने की हिर्स (लालच) की जाती है, इस से ज़ियादा नमाज़ व नेकियों की हिर्स कीजिये । (5 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴿117﴾ शुरूअ से ही बच्चों को ज़ियादा खाने पीने और अच्छे अच्छे लिबास से बे रग़बत किया जाए । (5 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴿118﴾ अच्छी निय्यत हो तो किसी के दीनी नुक़सान पर दिल जलाना कारे सवाब है । (5 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿119﴾ शादी में भी शरीअत के अहक़ाम ही की पाबन्दी की जाए । ग़ैर शर्इ रूसूमात में रिश्तेदारों की बात न मानी जाए, रिश्तेदार न जन्नत में दाख़िल कर सकते हैं न दोज़ख़ में डाल सकते हैं ।

(5 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿120﴾ मुफ़ती बहुत अक्ल मन्द होता है ।

(6 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 26 जनवरी 2015)

﴿121﴾ नाम ले कर पुकारना सुन्नत है ।

(6 रबीज़ल आख़िर 1436 हि., 26 जनवरी 2015 खुसूसी)

सालिहीन के कुर्ब में दफ़न होना (बड़ी) सआदत है ।

(7 रबीउल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015)

﴿122﴾ वोह बड़ा बद नसीब है जिस पर इस्लाह करने वालों का दरवाज़ा बन्द हो ।

(7 रबीउल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015)

﴿123﴾ येह ज़ेहन बना लीजिये कि मुझे कोई मारे या धक्के दे, मैं ने दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल नहीं छोड़ना, बल्कि दा'वते इस्लामी से ऐसे चिपक जाएं, कोई टुकड़े टुकड़े कर के भी जुदा न कर सके ।

(7 रबीउल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿124﴾ बुजुर्गानि दीन का फ़ैज़ हासिल करना चाहते हैं तो इन की सीरत पर अमल करें । **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمِ** इतना फ़ैज़ मिलेगा कि दूसरों को तक्सीम करेंगे ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015)

﴿125﴾ कोई किसी भी ना गवार अन्दाज़ में सुवाल करे, हमें सब्रो तहम्मूल से उस का अहसन (अच्छे) अन्दाज़ में जवाब देना चाहिये ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015)

﴿126﴾ किसी भी गुनाह से सुकून नहीं मिलता ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿127﴾ हराम माल में बरकत नहीं होती, किसी न किसी तरह हाथ से निकल जाता है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿128﴾ हुब्बे जाह (इज़्ज़तो शोहरत की महब्बत) बुरी बला है, इस में दुन्या व आख़िरत की तबाही है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿129﴾ हमें अल्लाह पाक के लिये जीना और उसी के लिये ही मरना है ।

(8 रबीउल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿130﴾ जुल्म, आखिरत का अंधेरा है ।

(8 रबीउल आखिर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿131﴾ अगर हम कमा हक्कुहू फुजूल बातों से बचने में काम्याब हो जाएं तो येह अल्लाह पाक की (बड़ी) ने'मत है ।

(8 रबीउल आखिर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿132﴾ एक दिन के बच्चे से भी तू तड़ाक से बात न की जाए ।

(8 रबीउल आखिर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿133﴾ जो आप से “तू” कह कर बात करता है, आप उस के साथ भी “आप, जी, जनाब” से गुफ्तगू किया करें ।

(8 रबीउल आखिर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿134﴾ अगर कोई सहीह मा'नों में मदनी इन्आमात पर अमल करे तो वोह नेक व परहेज गार बन जाएगा । (8 रबीउल आखिर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 खुसूसी)

﴿135﴾ ग्यारहवीं वाले (गौसे आ'जम) के दामन से वाबस्ता हो जाएं तो वोह बारहवीं वाले आका (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) तक पहुंचाएंगे ।

(10 रबीउल आखिर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴿136﴾ आखिरत के ए'तिबार से कब्र पहली मन्जिल है ।

(10 रबीउल आखिर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴿137﴾ गुनाह ईमान लेवा हो सकता है और (इस से) ईमान जाएअ होने का खतरा बढ़ जाता है । (10 रबीउल आखिर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴿138﴾ गुनाहों की बीमारी, बदन की बीमारियों से ज़ियादा तश्वीश नाक है । (16 रबीउल आखिर 1436 हि., 5 फरवरी 2015)

﴿139﴾ जिस का बेटा बे अमल हो उस को उस के बेटे की बे अमली का ता'ना देना दिल आजारी है । (16 रबीउल आखिर 1436 हि., 5 फरवरी 2015)

﴿140﴾ सब से बड़ी मुसीबत कुफ़्रो शिर्क है ।

(16 रबीउल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴿141﴾ डॉक्टर और दुकानदार नमाज़ के वक़्त अपनी दुकान वगैरा पर एक बोर्ड आवेज़ां कर के नमाज़े बा जमाअत अदा किया करें । उस बोर्ड पर नुमायां लिखा हो “वक़फ़ नमाज़” और इस के नीचे येह तहरीर हो “मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है” । (16 रबीउल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴿142﴾ लज़्ज़ते इश्के रसूल ला ज़वाल दौलत है ।

(16 रबीउल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴿143﴾ तहज्जुद पढ़ने वाले के चेहरे पर नूर होता है ।

(16 रबीउल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿144﴾ मस्जिद की सजावट लाइटों से नहीं, नमाज़ियों से है ।

(17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴿145﴾ अगर तमाम लोग किफ़ायत शिआरी से बिजली इस्ति'माल करें तो मुल्क भर में लोड शेडिंग में कमी आ सकती है ।

(17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴿146﴾ जो बारगाहे इलाही में झुकता है, बुलन्दी पाता है ।

(17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴿147﴾ सुब्ह के ख़ास फ़ज़ाइल हैं, तुलूए सुब्ह ता तुलूए आप़ताब अल्लाह रिज़्क़ तक्सीम फ़रमाता है । (17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴿148﴾ मोबाइल फ़ोन को राबिते का आला बनाइये, इसे तफ़रीह के लिये इस्ति'माल न कीजिये । आज कल मोबाइल गुनाहों का आला बन चुका है ।

(17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴿149﴾ जब भी कोई हृदीसे पाक बयान करें तो उस में अपनी तरफ़ से कोई लफ़्ज़ न मिलाएं । (17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿150﴾ जज़्बाती आदमी अच्छा काम बहुत अच्छा करता है और मन्फ़ी काम बहुत बुरा करता है। (17 रबीउल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

## अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के मलफूजात में से एक मदनी गुलदस्ता

**सुवाल :** बा हया बनने का नुस्खा इश्राद फ़रमा दीजिये ?

**जवाब :** हया हर शख़्स में होती है, किसी में कम होती है और किसी में ज़ियादा होती है। यहां तक कि कोई ग़ैर मुस्लिम भी हो तो उस में भी कुछ न कुछ हया ज़रूर होती है, वरना कपड़े क्यूं पहनते !! हया है जभी तो कपड़े पहनते हैं। अलबत्ता मुसलमान की हया की अपनी ही एक शान है।

अमीरुल मुअमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की हया का तो क्या कहना ! आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ चार दीवारी में कपड़े तब्दील करते हुए भी हया के मारे सिमट जाते थे। (مسند امام احمد، 1/160، حديث: 543) हमें भी अपनी हया का मे'यार चेक करना चाहिये। अभी तो बिल्कुल शरीफ़ बन कर हया के साथ बैठे हुए हैं, लेकिन मौक़अ़ ब मौक़अ़ हमारी हया का क्या हाल होता होगा। हदीसे पाक में है : हया जितनी भी हो अच्छी है। (مسلم، ص 46، حديث: 157)

अफ़सोस यह है कि हमारी एक ता'दाद वहां हया नहीं करती जहां हया करनी चाहिये और वहां हया करती है जहां हया नहीं करनी चाहिये। जहां गुनाह होते हैं वहां हया करनी होती है, इसी तरह बे पर्दगी और बद निगाही में हया करनी होती है कि मेरा रब मुझे देख रहा है, मेरा क्या बनेगा !! हया का सब से ज़ियादा हक़ येही है कि हम **अल्लाह** पाक से हया करें, मगर हमारा हाल यह है कि हम गुनाह के कामों में हया नहीं करते। इस के बर अ़क्स बा'ज़ अवकात जहां नेकी का काम होता है वहां **مَعَاذَ اللهِ** हमें शर्म आ जाती है।

(मलफूजाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/269)

अगले हफ्ते का रिसाला

